The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 4 | Issue 7 | July 2026
ISSN: 2583-973X (Online), SJIF IF(2026): 5.6
Website: www.theacademic.in

मुंडा आदिवासी : सरना एवं बिरसाईत समाज का मानवशास्त्रीय अध्ययन : जिला खूंटी व पश्चिमी सिंहभूम के संदर्भ में

दुलारी सुमन ढोडराय

शोधार्थी ,मानवशास्त्र विभाग ,रांची विश्वविद्यालय रांची) झारखंड(

ईमेल आईडी – sumandulari12@gmail.com

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.22098211

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Received: 23-06-2026

Accepted: 24-07-2026

Published: 21-08-2026

Keywords:

सरना धर्म, बिरसाईत धर्म, बिरसा मुंडा, आदिवासी धर्म, धार्मिक सुधार, सांस्कृतिक पहचान, मानवशास्त्रमुंडा , आदिवासी।

ABSTRACT

यह अध्ययन झारखंड के आदिवासी समाज के दो मुख्य धार्मिक परंपराओं—सरना एवं बिरसाईत धर्म का मानवशास्त्रीय दृष्टिकोण से विश्लेषण प्रस्तुत करता है। भारत की आदिवासी धार्मिक परंपराएँ सांस्कृतिक विविधता, प्रकृति के प्रति सम्मान तथा सामुदायिक जीवन-मूल्यों की महत्वपूर्ण अभिव्यक्ति हैं। झारखंड के मुंडा समुदाय में प्रचलित **सरना एवं बिरसाईत धर्म** ऐसी दो विशिष्ट धार्मिक परंपराएँ हैं, जिन्होंने आदिवासी समाज की धार्मिक, सामाजिक-सांस्कृतिक संरचना को गहराई से प्रभावित किया है। सरना धर्म एक प्राचीन प्रकृति-आधारित धार्मिक परंपरा है, जिसमें सिङबोंङा, प्रकृति शक्ति ,धरती तथा पवित्र उपवन ,सरना स्थल के माध्यम से मानव और प्रकृति के बीच आध्यात्मिक संबंध स्थापित होता है। इसके विपरीत, बिरसाईत धर्म का उद्भव उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में बिरसा मुंडा के नेतृत्व में एक धार्मिक एवं सामाजिक सुधार आंदोलन के रूप में विकसित हुआ। इस आंदोलन ने मुंडा परंपरा सरना धर्म में बलि प्रथा ,अंधविश्वास, सामाजिक कुरीतियों तथा औपनिवेशिक शोषण के विरुद्ध संघर्ष करते हुए आदिवासी समाज में नैतिक अनुशासन, सांस्कृतिक स्वाभिमान और सामाजिक एकता को प्रोत्साहित किया। वर्तमान समय में आदिवासी धार्मिक पहचान, सांस्कृतिक संरक्षण तथा संवैधानिक मान्यता से जुड़े विमर्शों के संदर्भ में इन दोनों धार्मिक परंपराओं का

Disclaimer: The opinions, interpretations, conclusions, recommendations, analyses, and statements expressed in this research article are solely those of the author(s) and do not reflect the views, policies, or positions of the Publisher, Chief Editor, Editors, Editorial Board, Reviewers, or their affiliated institutions. The author(s) are solely responsible for ensuring the originality, authenticity, and integrity of the manuscript and for ensuring that it is free from plagiarism, AI-generated content, copyright infringement, data falsification, and any other form of academic misconduct.

मानवशास्त्रीय दृष्टिकोण से अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण हो गया है। यह अध्ययन दोनों धर्मों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, धार्मिक विश्वासों, पूजा-पद्धतियों, नैतिक मूल्यों, सामाजिक संगठन ,सांस्कृतिक तथा समकालीन प्रासंगिकता का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। इससे न केवल आदिवासी धार्मिक परंपराओं की गहन समझ विकसित होगी, बल्कि भारतीय मानवशास्त्र, समाजशास्त्र तथा धार्मिक अध्ययन के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान प्राप्त होगा।

मुंडा जनजाति का संक्षिप्त परिचय : आदि काल से भारत में कई आदिवासी समुदाय निवास करती आयीं हैं इनमें से मुंडा आदिवासी समुदाय भी एक है। मुंडा आदिवासी समुदाय का मुख्य निवास स्थान झारखंड है ,झारखंड के अलावे उड़ीसा ,छत्तीसगढ़ ,मध्य-प्रदेश ,बंगाल ,असम व अंडमान-निकोबार आदि स्थानों पर भी निवास करती हैं। इनकी अपनी अलग धार्मिक ,सामाजिक-सांस्कृतिक विशेषताएं होती हैं। आदिवासी समाज में पूजा की शुरुआत मानव सभ्यता के साथ ही प्रकृति) पेड़-पौधे ,जल-जंगल ,पहाड़-नदी ,धरती-आकाश (और अपने पूर्वजों के सम्मान से होती है। जिसमें परम्पराओं के अनुसार पाहन या कोई स्थानीय पुजारियों की अहम भूमिका होती है। मुंडा आदिवासी सरना समाज में पूजा की पद्धति प्रकृति और संस्कृति से गहराई से जुड़ी हुई है।

मुंडा आदिवासी भारत की प्रमुख जनजाति समुदाय में से एक है। यह झारखंड की तीसरी बड़ी जनजाति है। जिसकी जनसंख्या सन् 2011 की जनगणना के अनुसार झारखंड में लगभग 12.29 लाख है। इनका भौगोलिक विस्तार खूंटी, रांची, लोहरदगा, रामगढ़, पश्चिमी व पूर्वी सिंहभूम, चतरा, गुमला, सिमडेगा, पलामू, हजारीबाग, गढ़वा, एवं झारखंड के अन्य जिलों में है। मुंडा जनजाति झारखंड में कोलेरियन समूह की सशक्त एवं शक्तिशाली जनजाति है। प्रजातीय दृष्टिकोण से मुंडाओं को प्रोटो ऑस्ट्रोलॉयड समूह के अंतर्गत रखा जाता है। इनका रंग गहरा भूरा-सांवला या काला, कद मध्यम, कपाल लंबा, नाक मध्यम या चौड़ा, बाल काला व सीधा या लहरदार, होंठ मध्यम मोटा तथा शरीर सुडौल एवं पुष्ट होता है।

मुंडाओं की अपनी भाषा होती है, मुंडा लोग इसे होड़ो जगर कहते हैं। जिसे हिन्दी में मुण्डारी कहते हैं। यह भाषा ऑस्ट्रो-एशियाटिक भाषा-परिवार के अंतर्गत आती है। मुंडा लोग अपने-आपको "होड़ोको" अर्थात इंसान कहते हैं। मुंडा शब्द से अभिप्राय सम्पन्न व्यक्ति, गाँव के मुख्य या प्रधान से है।

मुंडा समुदाय का इतिहास भारतीय सभ्यता में सबसे पुरानी एवं प्राचीन है। इस समुदाय के इतिहास के संबंध में कोई ऐतिहासिक प्रमाण उपलब्ध नहीं, इसलिए विभिन्न इतिहासकार, मानवशास्त्रियों एवं भाषा-विदों, ने पुरातात्विक और

सांस्कृतिक साक्ष्यों के आधार पर अलग-अलग समय पर विभिन्न मत के आधार पर अध्ययन कर इतिहास का अनुमान लगाया है।

भाषाविद शिमट विल्हेम के मतानुसार "मुंडा भाषाएं ऑस्ट्रो-एशियाटिक भाषा परिवार का भाग है।

मानवशास्त्री रॉय एस. सी. के अनुसार मुंडा समुदाय छोटानागपुर का प्राचीन निवासी है तथा इसकी विशिष्ट सामाजिक व्यवस्था है।

ब्रिटिश नृवंशशास्त्री हर्बर्ट हॉप रिजले ने भारतीय जनजातियों और जातियों का अध्ययन मुख्यत: उनकी शारीरिक मानवशास्त्र के आधार पर किया है। उसने अपनी पुस्तक "The Tribes and Castes of Bengal (1891) में मुंडा जनजाति को भारत की प्राचीन आदिवासी समुदायों में स्थान दिया।

परिचय: मानवशास्त्रीय दृष्टिकोण से धर्म की परिभाषा, धर्म एक सांस्कृतिक एवं सामाजिक संस्था है, जिसमें अलौकिक शक्तियों, पवित्र प्रतीकों तथा आध्यात्मिक विश्वासों से संबंधित विचार, अनुष्ठान, नैतिक मूल्य और व्यवहार सम्मिलित होते हैं। यह समाज में सामाजिक एकता, सांस्कृतिक निरंतरता, नैतिक नियंत्रण तथा सामूहिक पहचान को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

सरना एवं बिरसाईत धर्म के संदर्भ में, सरना धर्म एक प्रकृति-आधारित (Nature-based/Animistic) धार्मिक परंपरा है, जिसमें सिङबोंङा, धरती-आकाश, पवित्र उपवन (सरना स्थल) और पूर्वजों के प्रति आस्था एवं सम्मान प्रमुख है। वहीं बिरसाईत धर्म आदिवासी धार्मिक परंपरा के भीतर विकसित एक सुधारवादी धार्मिक आंदोलन है, जिसने धार्मिक आस्था के साथ नैतिक अनुशासन, सामाजिक सुधार और सांस्कृतिक स्वाभिमान पर विशेष बल दिया।

मानवशास्त्र में **धर्म (Religion)** को केवल ईश्वर-पूजा तक सीमित नहीं माना जाता, बल्कि इसे विश्वासों, अनुष्ठानों, प्रतीकों तथा अलौकिक शक्तियों से संबंधित सांस्कृतिक व्यवस्था के रूप में समझा जाता है। विभिन्न मानवशास्त्रियों ने धर्म की अलग-अलग परिभाषाएँ दी हैं, जो धर्म के विभिन्न आयामों को स्पष्ट करती हैं।

Tylor Edward Burnett (1871) Primitive culture: Researches into the development of mythology, philosophy, religion, art, and custom (Vols. 1–2). John Murray. में "धर्म आध्यात्मिक (अलौकिक) प्राणियों या आत्मिक शक्तियों में विश्वास है।" टायलर ने धर्म का मूल आधार आत्मा एवं अलौकिक शक्तियों में विश्वास (Animism) को माना।

Frazer James George (1890) The golden bough: A study in comparative religion (Vols. 1–2). Macmillan **में** "धर्म मनुष्य से श्रेष्ठ अलौकिक शक्तियों को प्रसन्न या संतुष्ट करने का प्रयास है।" फ्रेज़र के अनुसार धर्म का उद्देश्य अलौकिक शक्तियों की कृपा प्राप्त करना है।

Durkheim, E. (1912/1995) "The elementary forms of religious life" के अनुसार, "धर्म पवित्र वस्तुओं से संबंधित विश्वासों और आचरणों की एक संगठित व्यवस्था है, जो समान आस्था रखने वाले लोगों को एक नैतिक समुदाय में एकीकृत करती है"

मानवशास्त्री ए. आर रेडक्लिप ब्राउन के अनुसार "सामाजिक परिवर्तन के बावजूद यदि पारंपरिक संस्थाएं नए संदर्भों में स्वयं को ढाल लें, तो वे सामाजिक एकता और संतुलन बनाए रख सकती है"।

कुमार सिंह सुरेश (2003) "बिरसा मुंडा और उनका आंदोलन (1872-1901) पुस्तक में बिरसा मुंडा के नेतृत्व में हुए उलगुलान के इतिहास और बिरसाईत धर्म के मत विचारों का अध्ययन किया गया है।

सरना एवं बिरसाईत धर्म का मानवशास्त्रीय अध्ययन सीमित संख्या में उपलब्ध है। ज्यादातर शोध बिरसा मुंडा के राजनीतिक आंदोलन पर केंद्रित हैं, इनके धार्मिक दर्शन पर अपेक्षाकृत कम मिलते हैं, दोनों धर्मों की सामाजिक एवं सांस्कृतिक भूमिका का मानवशास्त्रीय विश्लेषण अभी भी अपर्याप्त है। समकालीन आदिवासी धार्मिक पहचान के संदर्भ में दोनों परंपराओं का संयुक्त अध्ययन अपेक्षाकृत कम हुआ है। वर्तमान समय में इनके कई सामाजिक एवं धार्मिक संस्थान एवं अनुष्ठानों में परिवर्तन हो रहे हैं। इसलिए इस विषय पर अध्ययन करना महत्वपूर्ण है।

महत्व: सरना एवं बिरसाईत धर्म का अध्ययन मानवशास्त्र, समाजशास्त्र, तथा धार्मिक अध्ययन की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। इन दोनों धार्मिक परंपराओं का मानवशास्त्रीय अध्ययन आदिवासी धार्मिक चिंतन के विकास क्रम को समझने में महत्वपूर्ण योगदान देता है। यह अध्ययन सरना एवं बिरसाईत धर्म के ऐतिहासिक विकास, धार्मिक विश्वासों, पूजा-पद्धतियों, सामाजिक संरचना, नैतिक मूल्यों तथा सांस्कृतिक परंपराओं का मानवशास्त्रीय दृष्टिकोण से विश्लेषण प्रस्तुत करता है। इससे दोनों धर्मों के बीच विद्यमान समानताओं एवं भिन्नताओं को स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है। साथ ही, यह अध्ययन यह भी दर्शाता है कि किस प्रकार दोनों धार्मिक परंपराओं ने आदिवासी समाज में सामाजिक एकता, सांस्कृतिक निरंतरता, पर्यावरण संरक्षण तथा सामुदायिक जीवन को सुदृढ़ किया है।

वर्तमान समय में आदिवासी धार्मिक पहचान, सांस्कृतिक अधिकार, पारंपरिक ज्ञान तथा धार्मिक स्वतंत्रता से जुड़े प्रश्न राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर महत्वपूर्ण होते जा रहे हैं। इस संदर्भ में यह अध्ययन नीति-निर्माताओं, शिक्षाविदों, शोधकर्ताओं तथा आदिवासी समुदायों के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकता है। इसके अतिरिक्त, झारखंड की सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण, आदिवासी धार्मिक परंपराओं के प्रलेखन तथा भावी मानवशास्त्रीय अनुसंधानों के लिए एक महत्वपूर्ण संदर्भ सामग्री प्रदान करेगा। इस प्रकार, यह अध्ययन न केवल अकादमिक ज्ञान का विस्तार करता है, बल्कि आदिवासी धार्मिक विरासत के संरक्षण एवं सामाजिक-सांस्कृतिक सशक्तीकरण में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है।

उद्देश्य

आदिवासी मुंडा सरना एवं बिरसाईत धर्म की धार्मिक विश्वास, आस्था एवं पूजा-पद्धति, अनुष्ठान को जानना।

दोनों समाज की धार्मिक समानता एवं भिन्नता को समझना।

वर्तमान में आदिवासी पहचान, परिवर्तन, सामाजिक-सांस्कृतिक संरक्षण में दोनों धर्म की भूमिका को जानना।

वर्तमान शोध अध्ययन पद्धति :वर्तमान अध्ययन में गुणात्मक) Qualitative) अनुसंधान पद्धति का उपयोग किया गया है। लेख में प्रस्तुत आँकड़े प्राथमिक स्रोत के रूप में साक्षात्कार ,अवलोकन के माध्यम से एकत्र किया गया है। इसके अंतर्गत मानवशास्त्रीय एवं ऐतिहासिक साहित्य, प्रकाशित शोध-ग्रंथों, शोध-पत्रों ,पुस्तक ,इंटरनेट तथा अन्य द्वितीयक स्रोतों से भी एकत्र किया गया है।

तथ्य विश्लेषण एवं परिचर्चा :

मुंडा आदिवासी सरना धर्म : सरना धर्म मुंडा आदिवासी का पारंपरिक प्रकृति-आधारित धर्म है। **"सरना"** शब्द का अर्थ पवित्र उपवन से है जहां मुंडा सरना समुदाय के लोग अपने विभिन्न देवी-देवता और प्रकृति शक्तियों की आराधना करते हैं। सरना धर्म ब्रह्मांड में विद्यमान अदृश्य शक्ति, प्रकृति और अपने पूर्वजों की आराधना पर आधारित है। इसमें पृथ्वी, जल-जंगल, पहाड़, आकाश, सूर्य, चंद्रमा तथा अन्य प्राकृतिक शक्तियों को पवित्र माना जाता है। मुंडा सरना धर्म प्रकृति और आध्यात्मिक शक्तियों के मध्य संतुलन स्थापित करने वाली धार्मिक प्रणाली है। विभिन्न मानवशास्त्रियों ने धर्म को अलग-अलग दृष्टिकोण से समझाया है। प्रमुख **मानवशास्त्री एडवर्ड बर्नेट टायलर** के अनुसार **धर्म की उत्पत्ति का आधार जीववाद माना है। उनके अनुसार धर्म आत्मा और अदृश्य शक्तियों में विश्वास से विकसित हुआ।** उन्होंने समाज और धार्मिक विश्वासों की तुलना करके धर्म के विकास को समझाया है।

मानवशास्त्रीय दृष्टि से सरना धर्म को **प्रकृति-आधारित पारंपरिक धार्मिक व्यवस्था (Nature-based Indigenous Religion)** माना जाता है। इसके विपरीत, बिरसाईत धर्म को **पुनरुत्थानवादी (Revitalization Movement)** और **सुधारवादी धार्मिक आंदोलन** के रूप में देखा जाता है। मानवशास्त्री **Anthony F. C. Wallace** के **Revitalization Movement** सिद्धांत के अनुसार बिरसाईत धर्म सामाजिक संकट के समय सांस्कृतिक पुनर्गठन और सामुदायिक पहचान को सुदृढ़ करने का प्रयास था।

सरना धर्म का धार्मिक पूजा स्थान सरना स्थल, जयर स्थल या जाहेर स्थल है। जहां मुख्यत: सखुआ/साल वृक्षों का समूह होता है। यहाँ गाँव के लोग सामूहिक में पाहन द्वारा अलग-अलग समय पर गाँव की समृद्धि, सुख-शांति और सुरक्षा के लिए पूजा-पाठ सम्पन्न करते हैं। सरना स्थल को बोंडाओं का निवास स्थान माना जाता है। इसलिए इन क्षेत्रों

के वृक्षों को काटना या नष्ट करना वर्जित माना जाता है। जिसके परिणामस्वरूप पर्यावरण संरक्षण की एक पारंपरिक व्यवस्था विकसित होती है।

मुंडा सरना एवं बिरसाईत धर्म झारखंड के आदिवासी समुदाय, विशेष रूप से मुंडा समुदाय की धार्मिक, सामाजिक-सांस्कृतिक पहचान के दो महत्वपूर्ण आयाम हैं। सरना धर्म प्रकृति पूजा, पूर्वजों के सम्मान एवं आदिवासी परंपरा का प्रतिनिधित्व करता है, वहीं बिरसाईत धर्म की शुरुआत 19 वीं सदी के महानायक भगवान बिरसा मुंडा के नेतृत्व में सरना धर्म की कुरीतियों से असंतोष होकर अपनी एक नई विचार धारा से निर्मित धार्मिक एवं सामाजिक सुधार आंदोलन के रूप में बिरसाईत धर्म विकसित हुआ। बिरसा मुंडा ने कई धर्मों से प्रेरित होकर अपनी एक नए बिरसाईत धर्म की शुरुआत की। जिसमें उन्होंने सरना धर्म में प्रकृति पूजा की अवधारणा को सर्वोपरि रखते हुए, उनमें धार्मिक, सामाजिक सुधार कर बिरसाईत धर्म की अवधारणा को विकसित किए। दोनों धर्म का आधार प्रकृति, नैतिक जीवन, सामुदायिक एकता तथा पूर्वजों के प्रति सम्मान है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि सरना एवं बिरसाईत धर्म में सर्वोच्च देवता का स्थान **सिङबोङा** हैं। **सिङबोङा** से तात्पर्य उस प्राकृतिक शक्ति से है, जिसने पूरी सृष्टि, सूरज, चाँद, तारे, आकाश, धरती एवं पूर्ण जीव-जगत की रचना की है। सरना धर्म में उसी शक्ति को **सिङबोङा** कहा जाता है, और उसकी आराधना की जाती है। बिरसाईत धर्म में सर्वोच्च देवता के आराधना के लिए **सिङबोङा** के स्थान पर "**भगवान आबा**" से संबोधित किया जाता है। अध्ययन से स्पष्ट है कि सरना धर्म में सिङबोङा के सहायक अन्य बोङाओं के नाम पर बलि दिया जाता है, जबकि बिरसाईत धर्म में **एकेश्वरवादी** एक ही भगवान की आराधना है, भगवान के नाम पर किसी तरह की बलि प्रथा, फूल-फल, दिया – धूप अर्पण या चढ़ावा को समर्थन नहीं करते हैं। बिरसाईत धर्म में पूजा करने के लिए किसी विशेष पूजा स्थान, मठ, मंदिर की जरुरत नहीं है, इनके अनुसार भगवान आबा सर्वत्र सभी जगह विद्यमान हैं, इसलिए भगवान की आराधना कहीं पर कभी भी हाथ जोड़कर खड़े या बैठकर कर सकते हैं। **प्रसिध्द मानवशास्त्री जेम्स जॉर्ज फ्रेजर ने अपनी पुस्तक "The Golden Bough"** के अनुसार धर्म **उत्पति मानव विचार का विकास जादू, धर्म और विज्ञान के क्रम में हुआ।**

सरना धर्म का मूल सिद्धांत प्रकृति में विद्यमान अदृश्य शक्ति को ईश्वर का स्वरूप मानकर उसकी उपासना करना है। और उसी शक्ति को सिङबोङा नाम से संबोधित किया जाता है। इसके साथ ही सूरज, चाँद, तारे, धरती, आकाश, जंगल-पहाड़, नदी-झरने, छोटे-बड़े सभी पेड़-पौधे, जीव-जन्तु सभी का संरक्षण को धार्मिक कर्तव्य माना जाता है। सिङबोङा को सृष्टिकर्ता एवं सभी जीव जगत का रक्षक माना जाता है। अपने पूर्वजों पुरखों को समाज परिवार का संरक्षक, मार्गदर्शक माना जाता है, जिसका प्रमाण विभिन्न धार्मिक पूजा अवसरों में अदिङ ओड़ा: में उनके स्मरण और सम्मान में सबसे पहले पूर्वजों को भोजन अर्पण करना है। हर मुंडा सरना परिवार में विभिन्न अनुष्ठान के समय पूर्वजों को सबसे पहले अदिङ ओड़ा: में भोजन अर्पण किया जाता है। उसके बाद ही घर के सभी सदस्य भोजन करते हैं। सरना समाज की सामुदायिक जीवन सामूहिकता, सहयोग, समानता और ग्राम आधारित सामाजिक व्यवस्था पर बल देता

है। धार्मिक एवं सामाजिक उत्तरदायित्व प्रकृति संरक्षण, जल-जंगल जमीन की रक्षा को माना जाता है। सत्य, ईमानदारी, परिश्रम एवं आपसी भाईचारा, सामाजिक अनुशासन को नैतिक जीवन का आदर्श माना जाता है।

बिरसाईत धर्म के मुख्य: सिद्धांत में बिरसा आबा ने **"भगवान आबा"** धरती आकाश, सूरज-चाँद, तारे, धरती के छोटे-बड़े जीव-जन्तु बनाने वाले सृष्टिकर्ता (सिङबोङा) की सर्वोच्च सत्ता को बनाए रखते हुए शुद्धता की नैतिक जीवन, धार्मिक सुधारवादी पर बल दिया है। इसे बिरसाईत समुदाय पूरी आस्था के साथ अनुसरण करते हैं। अंधविश्वास, सामाजिक बुराइयों और अनावश्यक पूजा अनुष्ठानों, बलि प्रथा, विभिन्न देवी – देवता, असुर देवता, दुर्गा मां, काली मां, शिव -पार्वती की सेवा का विरोध किया जाता है। डायन, भूत-प्रेत पर विश्वास को समर्थन नहीं करता है। नशा मुक्ति, शराब या अन्य नशीले पदार्थों के सेवन से दूर रहने का संदेश दिया जाता है। सांस्कृतिक अस्मिता विशेषकर आदिवासी संस्कृति, भाषा, परंपराओं और धार्मिक पहचान की रक्षा, सामुदायिक एकता, समानता समाज में सहयोग और संगठन को आवश्यक माना जाता है। साथ ही शोषण, अत्याचार, और अन्याय के विरुद्ध संगठित होकर संघर्ष करने की प्रेरणा मिलती है।

दोनों धर्म की समानताएँ

दोनों धर्म का आधार आदिवासी सांस्कृतिक परंपरा है, एवं प्रकृति और पर्यावरण के महत्व को स्वीकार करते हैं। दोनों समुदाय, सहयोग और सामूहिक जीवन पर बल देते हैं। सिङबोंङा की अवधारणा का महत्वपूर्ण स्थान है। दोनों का उद्देश्य समाज में नैतिकता, सहयोग और सामुदायिक एकता बनाए रखना है।

सरना एवं बिरसाईत धर्म में प्रमुख अंतर

सरना धर्म का कोई एक संस्थापक नहीं है, जबकि बिरसाईत धर्म का नेतृत्व एवं संस्थापक बिरसा मुंडा ने किया।

सरना धर्म एक **प्राचीन पारंपरिक धर्म** है, जबकि बिरसाईत धर्म **सुधारवादी धार्मिक आंदोलन** के रूप में विकसित हुआ।

सरना धर्म में अनेक बोंगा एवं पारंपरिक अनुष्ठानों का महत्व है, जबकि बिरसाईत धर्म ने अंधविश्वास और बलि प्रथा, दान-दक्षिणा का सख्त विरोध करता है।

बिरसाईत धर्म धार्मिक सुधार के साथ-साथ सामाजिक और राजनीतिक चेतना का भी माध्यम बना।

सरना धर्म में रुढ़ि पारंपरिक सरना स्थल में पूजा अनुष्ठान के समय महिलाओं की उपस्थिति वर्जित है।
बिरसाईत धर्म में किसी भी धार्मिक, सांस्कृतिक अनुष्ठान में महिलाएं स्वतंत्र होकर शामिल होती हैं। महिलाओं को विशेष स्थान दिया जाता है।

सरना धर्म के मत एवं विश्वास :-

- सिङबोङा के घर के रूप में प्रकृति के अवयवों पहाड़, जंगल, नदियों को ही प्राथमिकता दी जाती है, सिङबोङा की पूजा-अर्चना के लिए मानव निर्मित किसी मंदिर-मठ, गिरजा-घर की आवश्यकता नहीं है। वे पेड़ के नीचे पूजा करते हैं।
- सरना धर्म में पूर्वजों का सम्मान एवं उनके नेतृत्व पर समाज का दिशा – निर्देशन करना है। समाज का दिशा-निर्देशन किसी मसीहा ,अवतार, पैगम्बर द्वारा नहीं है।
- सरना धर्म में सिङबोङा से सीधे जुड़ने की स्वतंत्रता है। इसमें किसी मध्यस्ता की अनिवार्यता नहीं है।
- सरना धर्म में मनुष्य को मृत्यु के बाद अपने समाज में ही वापस आकर रहना है, इसलिए सामाजिक नियमानुसार जीवन बिताकर अपने पूण्य का भागी होता है। और जो अपने समाज के विरुद्ध जीवन जीता है, उसे पाप कर्म समझा जाता है, इसलिए स्वर्ग-नरक पृथ्वी पर ही है, अन्यत्र नहीं।
- मनुष्य को सृष्टि के अन्य अवयव जीव-जन्तुओं के साथ पारस्परिक आपसी सामंजस्य स्थापित कर जीवन व्यतीत करना चाहिए, न कि उसके नियम के विरुद्ध।
- सरना धर्म में प्रकृति एवं प्रकृति शक्ति की पूजा होती है।

बिरसाईत धर्म के मत एवं विश्वास:

- बिरसाईत धर्म में "**एकेश्वरवादी**" एक ही "भगवान आबा" (सिङबोङा, प्रकृति में विद्यमान अदृश्य शक्ति जिसका नियंत्रण पूरी सृष्टि पर है) की आराधना की जाती है।
- बिरसाईत धर्म में भगवान आबा से सीधे जुड़ने की स्वतंत्रता है, किसी अन्य मध्यस्ता की अनिवार्यता नहीं है।
- पूर्वजों के संघर्ष, इतिहास से प्रेरित होकर समाज का दिशा-निर्देशन किया जाता है।
- भगवान आबा की अर्जी-गोवरि के लिए मानव निर्मित मठ-मंदिर, गिरजाघर की आवश्यकता नहीं है। प्रकृति द्वारा निर्मित पेड़-पौधे, खुले आसमान के नीचे कभी भी, कहीं भी हाथ जोड़कर भगवान की आबा की अर्जी कर सकते हैं।
- भगवान के नाम पर पशु बलि, तपन, दिया-धूप, फूल-फल अर्पित करना वर्जित है।
- सत्य अहिंसा विशेष मूल सिद्धांत हैं।
- पुनर्जन्म की आवधारणा पर विश्वास किया जाता है।
- मृत्यु पश्चात आत्मा नहीं मरती, वह अपनी शरीर बदलती है, इंसान अपने पाप-पुण्य का भागीदार स्वयं होता है, और उसी आधार पर पुन: जन्म लेता है।
- डायन प्रथा, भूत-प्रेत पर विश्वास को मान्यता प्रदान नहीं करता है।
- नशा-पान, चोरी, झूठ बोलना आदि को पाप माना जाता है।

- बिरसाईत धर्म में सामाजिक-सांस्कृतिक, धार्मिक सुधारवादी विचार-धारा अपनाया जाता है।
- मनुष्य को सृष्टि में विद्यमान सभी छोटे-बड़े, जीव-जन्तु, ग्रह-नक्षत्र, पेड़-पौधे किसी को हानि पहुंचाए बिना, परस्पर सामंजस्य स्थापित करते हुए, सम्मान पूर्वक प्राकृतिक नियमानुसार जीवन व्यतीत करने की स्वतंत्रता है, ना की उस नियम के विरुद्ध।

सरना धर्म में सिङबोंङा पूजा की आवधारणा है, सिङबोंङा से तात्पर्य सर्वोच्च भगवान सृष्टिकर्ता से है। जिन्होंने सृष्टि की रचना की। या फिर प्रकृति में विद्यामान उस अदृश्य शक्ति से है। जिसका नियंत्रण पुरे ब्रहमांड में है। सिंङबोंङा के साथ "सिदा एंगा" यानि आदि माता की आराधना की जाती है। जिसका वर्णन मुंडाओं की सृष्टि कथा, सोसो बोंङा की कथा" तथा असुर कथा में की जाती है। मुंडा आदिवासी सरना धर्म के लोग लुटकुम हड़म, लुटकुम बुढ़िया को अपना पहला एवं आदि पूर्वज प्रजनक मानते हैं इसलिए सरना धर्म के लोग हर पूजा में सिङबोंङा के साथ इन्हे भी याद करते हैं।

सरना धर्म में सिङबोङा अर्जी के कुछ अंश इस तरह से हैं-

<u>सिङबोंङा अर्जि</u>

हे सिरमारेन सिंङबोंङा   हे आकाश के परमेश्वर

ओतेरेन ओते एंगा   पृथ्वी की धरती माता

तोआ लेका तुरोः किन   दूध जैसे उगने वाले

दहि लेका हासुरोः किन।।   दही जैसे डूबने वाले।।

आबेनगे मुनु रेनकिन   आप दोनों ही आदि के हो

आबेनगे टुंडु रेनकिन   आप दोनों ही अंत के हो

आबेनगे सुबा रेनकिन   आप दोनों ही मूल के हो

आबेनगे चुटि रेनकिन।।   आप दोनों ही चोटी (ऊपर,सर्वोच्च) के हो।।

जोनोमाते हानसाः रेनकिन   जन्म से पहले

गोनएः आते पारोमरेन किन   मृत्यु से परे,

जुगु जुगु जीदोः किन   युग – युग जीने वाले

जानाओ जानाओ तइनोः किन।। सदा – सर्वदा रहने वाले।

होयोरे जी ओओमकिन हवा में प्राण देने वाले

दाः रे मायोम सिरजाओकिन पानी में लहू सिरजाने वाले

सिरमा रे गुयु तुरुबकिन अम्बर में कुंबा (टेंट) बनाने वाले

ओते रे हिता पारचाओकिन।। धरती में बीज बोने वाले।।

आबेनाः होनको नांगेन अपने बच्चों के लिए

आबेनाः गांड़ाको नांगेन अपनी संतान के लिए

दाः बितर उकुआकान पानी के अन्दर छिपी हुई

जालाकार बितार दानाङाकान।। जल के भीतर दबी हुई।।

हाइ दुताम, कड़ाकोम दुताम् मछली दूत, केंकड़ा दूत

होरो दुताम लेंडाद दुताम् कछुआ दूत, केंचुआ दूत

ओते बेन बाइकेदा तुमने पृथ्वी का निर्माण किया

धरतीबेन बाड्इकेदा।। तुमने धरती का गठन किया।।

सिंगि तुरोः चांड़ः मुलुः सुर्योदय की ओर, चंद्रोदय की ओर

काटा जाम्बाड़ा बोओ कुंदुड़ि उत्तर दिशा, दक्षिण दिशा

आबेनाः कोयोङरे, तुम्हारी ही गोदी में

आबेनाः सिपिङरे तुम्हारी ही बांह में

आबेनगे सिरजानकिन, आप ही सृष्टिकर्त्ता

आबेनगे उपजानकिन।। आप ही जीवनदाता।।

जिलिमिलि ओते झिलमिल करती धरती

लिबि-लिबि सिरमा	चमकती आसमान
पाटिलेका बिलाकना	चटाई समान बिछी हुई
डुबा लेका हारुबाकाना।।	कटोरी की तरह औंधा हुआ।।
ओते चेतान टुनाङतानि	पृथ्वी के ऊपर रेंगने वाले
लाता बितर उगुराकानिः	खोह के भीतर छिपे हुए
होयोरे आपिर ओटाङतानिः	हवा में उड़ने फिरने वाले
दाः बितार ओयारतानिः।।	पानी के भीतर तैरने वाले।।
जोम – नू ओमकिन	सबको खाना – पानी देनेवाले
दाः तासाद हाटिङकिन	सबको घास – पानी बांटने वाले
उम्बुलकिन, चातोमकिन	सबको छाया देनेवाले, छतरी देनेवाले
होरोकिन, जाङगिकिन।।	रक्षा करने वाले, ओगरने वाले
तारा निदा, तारा सिंगि	आधी रात, आधा दिन
सेताः सिंगाड़ा, तिकिन तरसिङ	सुबह-शाम, दोपहर - अपराह्न
कामि सोमोय तोलकिन	काम के लिए समय बांधा
रुड़ुन सोमोए ठाराओकिन।।	आराम के लिए समय ठहराया।।
सिंगि–चांडुः, इपिल–रिबिल	सुरज – चांद, तारे - आसमान
रोकोम हिता, रेद्- रानु	अनेक बीज, जड़ि - बुटि
आनाः, मानाः जो सिबिल	अनेक तरह के स्वादिष्ट फल
दिरि – दारु तासाद् – रुड़ाः।।	पेड़ – पौधे, घास – फुस।।
सिरजाओआकाद लेआबेन	आपने इसकी सृष्टि की

उपजानाकाद लेआबेन	आपने इसे ऊपजाया है
सोतोः आकादलेआबेन	आपने इसे सजाया है
संगोमाकाद लेआबेन।।	आपने पिरोया है।।

सरना स्थल में सामूहिक पूजा : स्थान खूंटी

(वर्तमान समय में मुंडा सरना गाँव में नए सरना स्थल का निर्माण किया गया है, जो मुख्यत: किसी पेड़ के नीचे स्थित होती है। जहां महिला-पुरुष, बच्चे-बुजुर्ग सभी एक साथ एकत्र होकर पूजा अनुष्ठान सम्पन्न करते हैं।)

(मुंडा आदिवासी सरना धर्म के अनुयायी सामुदायिक सरना स्थल में पूजा करते हुए।)

सरना एवं बिरसाईत समाज में सिङबोंङा, "भगवान आबा" को सर्वश्रेष्ठ सृष्टि के सृजनहार मानते हैं और लुटकुम हड़म एवं लुटकुम बुढ़िया को अपना आदि पूर्वज मानते हैं। दोनों समाज में पूर्वजों के सम्मान, मार्गदर्शन एवं दिशा-निर्देशन पर समाज का संचालन, संरक्षण व संवर्धन होता है।

बिरसाईत धर्म में "भगवान आबा" (सर्वश्रेष्ठ ईश्वर) अर्जी गोवरि के कुछ अंश:

हे भगवान आबा-3	हे भगवान आबा
हे भगवान बिरसा आबा	हे भगवान बिरसा आबा-3
हे धर्म आबा-एअङ किन-3	हे धर्म पिता-माता दोनों-3
धर्म आबा-एअङ किना: आशीष बरदान ते	धर्म माता-पिता के आशीष-वरदान से
ओते ओड़ो: सिरमा बाई केन आबा	धरती और आकाश बनाने वाले पिता
अर्जी जअ:मा गोवरि दोआई जअ:मा	आपका अर्जी-विनती, दुहाई कर रहे हैं
ने होड़ोमो ने आत्मा आम रेगे,	इस शरीर इस आत्मा को आप में ही
आबा ले जिमा केदा॥	पिता सौंप दिए हैं॥

बिरसाईत धर्म के अनुयायी भगवान बिरसा मुंडा की पुण्य तिथि पर रांची पुराना जेल परिसर में बिरसा आबा के समक्ष अर्जी-गुवारि (प्रार्थना) करते हुए।

(बिरसाईत अनुयायी द्वारा पथ)

मुंडा लोककथा में मनुष्य का सृजन एवं उनकी धार्मिक पूजा-पाठ, विश्वास आस्था एवं मान्यता:-

मुंडा लोककथा के अनुसार सिङबोङा सबसे पहले अपने पैर से रौंदे मिट्टी से बेल पेड़ के नीचे लुटकुम हड़म को मुर्ति के रुप में बनाए, और गोलाईची पेड़ के नीचे लुटकुम बुढ़िया को बनाए। सिङबोङा ने दोनों को दुब घास, आम पत्ते के सहारे घड़े के पानी से दोनों मुर्ति में छिड़कर उनमें प्राण देकर जीवन दान दिए थे। इसलिए सरना धर्म में हर पुजा के समय आज भी बेल पत्ता व गोलाईंची के फूल, आम का पत्ता, दुब घास व पानी चढ़ाए जाते हैं। वहीं बिरसाईत धर्म में इसे विशेष महत्व दिया जाता है, लेकिन भगवान की अर्जी के समय दान-दक्षिणा अर्पित नहीं किया जाता है।

अदिङ ओड़ाः में पूजा : मुंडा सरना समुदाय में किसी भी पूजा अनुष्ठान या पर्व-त्योहार के समय सर्व-प्रथम भोजन का कुछ अंश, पानी सखुआ के पत्ते या पतल में अपने पूर्वजों को अदिङ ओड़ा में घर के मुख्य द्वारा अर्पित किया जाता है। उसके बाद परिवार के सभी लोग भोजन ग्रहण करते हैं।

बिरसाईत धर्म : भगवान आबा, पूर्वजों एवं प्रकृति के सभी जीव-जन्तु, पेड़-पौधे, सजीव-निर्जीव तत्वों को याद करते हुए उन्हें पर्यावरण संतुलन बनाए रखने के लिए हाथ जोड़कर धन्यवाद देते हैं। पूजा में घर के सभी सदस्य शामिल होते हैं। भगवान और पूर्वजों के नाम पर भोजन का अंश अर्पित नहीं किया जाता है। उसके बाद सभी भोजन करते हैं।

सरना एवं बिरसाईत धर्म की सामाजिक-सांस्कृतिक व्यवस्था:

सरना एवं बिरसाईत समाज की सामाजिक संरचना परिवार, किली (गोत्र), नातेदारी, विवाह, जन्म-मृत्यु, एवं पारंपरिक शासन व्यवस्था, मुंडा खुटकट्टी क्षेत्र में मुंडा मानकी शासन व्यवस्था तथा नागुरी क्षेत्र में मुंडा पड़हा व्यवस्था शासन प्रणाली के आधार पर संचालित होती है। सरना एवं बिरसाईत दोनों समाज की परिवारिक संरचना पितृसत्तात्मक एवं पितृवंश व्यवस्था द्वारा संचालित होती है। समाज की प्रथम इकाई परिवार होती है, दोनों समुदाय में दो प्रकार के परिवार संयुक्त एवं एकल पाए जाते हैं। र्वतमान समय में परिवार की संरचना बदल रही है, शिक्षा और रोजगार के कारण एकल परिवार की संख्या में वृध्दि हुई है, लेकिन इसके बावजूद दोनों समुदाय की परस्पर सामूहिक सहभागिता, प्रेम, सम्मान व सहयोग की भावना बनी हुई है।

सरना व बिरसाईत दोनों समुदाय की नातेदारी व गोत्र व्यवस्था एक ही समान है, लेकिन क्षेत्र और बोली के आधार पर नातेदारी व्यवस्था में थोड़ा अंतर पाया जाता है। जैसे :- हसादा क्षेत्र में पिता को मुण्डारी में आबागा और वही नागुरी क्षेत्र में केवल आबा कहा जाता है। हसादा मुंडा में अपने से बड़ों के सम्बोधन के अंत में हमेशा **"गा"** का प्रयोग होता है, और छोटों के लिए **"ना"** बोला जाता है, जैसे: **अबागा**, (पिताजी) **"बिटिना"** (बेटी)**।**

सरना बिरसाईत दोनों समुदाय की सामाजिक संरचना किली व्यवस्था के आधार पर संचालित होती है। किली व्यवस्था दोनों समुदाय की सामाजिक संरचना की अहम, महत्वपूर्ण आधार स्तंभ है। हर गोत्र का संबंध टोटम से होता है और उसे संबंधित किली या गोत्र के लोग अपने टोटम का सम्मान करते हैं, और उसे अनावश्यक क्षति नहीं पहुंचते हैं। सरना तथा बिरसाईत दोनों समुदाय में एक ही गोत्र में विवाह निषिद्ध होता है। समान गोत्र के सदस्य एक पूर्वज के संतान माने जाते हैं, इसलिए उन्हें भाई – बहन के समान समझा जाता है, जिससे सामाजिक संबंधों का विस्तार होता है। वर्तमान समय में आधुनिक परिवर्तनों के बावजूद गोत्र व्यवस्था मुंडा समुदाय में आज भी समाज की सामाजिक पहचान एवं पारंपरिक संगठन का महत्वपूर्ण अंग के रूप में बनी हुई है।

विवाह व्यवस्था मुंडा समाज की एक महत्वपूर्ण सामाजिक संस्था है, जिसमें केवल दो व्यक्तियों का संबंध नहीं बल्कि दो परिवारों तथा दो अलग गोत्र के बीच सामाजिक-सांस्कृतिक संबंध बनाने का माध्यम है। सरना तथा बिरसाईत मुंडा समाज की विवाह व्यवस्था पारंपरिक रीति-रिवाजों, गोत्र के नियम, तथा सामाजिक सामुदायिक मान्यताओं के आधार निर्धारित होती है। दोनों समुदाय में इसका उद्देश्य सामाजिक संगठन, वंश की निरंतरता तथा एकता को बनाए रखता है। मुंडा समाज के दोनों समुदाय सरना एवं बिरसाईत में गोत्र बहिर्विवाह तथा अंतर्विवाह निर्वहन का विशेष ध्यान दिया जाता है। दोनों समुदाय में सामाजिक विवाह, प्रेम विवाह, ढुकू विवाह, विधवा विवाह, विधुर विवाह पाए जाते है। दोनों समाज में वधू मूल्य (गोनोंङ) "डालि टका" व्यवस्था पाई जाती है, जिसमें वर पक्ष वधू पक्ष को वधू मूल्य के प्रतीकात्मक रूप में दिया जाता है। सरना समाज में गोनोंङ व्यवस्था पहले परंपारिक सामाजिक व्यवस्था के तहत तय मूल्य पर दिया जाता था, लेकिन अब दूसरे समाज को देखकर वधू मूल्य अपने हिसाब से तय कर रहे है। वहीं बिरसाईत समाज में आज भी अपने बिरसाईत धर्म के सामाजिक व्यवस्था के आधार पर तय मूल्य के अनुसार ही वधू मूल्य अदा

की जाती है। बिरसाईत समुदाय में तलाक की व्यवस्था नहीं है। लेकिन सरना समुदाय में कुछ विशेष परिस्थिति में तलाक पूरे समाज की उपस्थिति में दिलवाई जाती है, इस व्यवस्था को **सकम चरिः** कहा जाता है।

सरना समाज में बच्चे का जन्म के समय कुछ दिनों तक मां और बच्चे से मिलने में निषेध होते हैं जैसे: जब तक छठी संस्कार नहीं हो जाता है तब - तक मां और बच्चे को अलग कमरे में रखा जाता है और उसकी सेवा के लिए गाँव या परिवार में ही कोई बुजुर्ग महिला को रखा जाता है। छठी संस्कार के बाद बच्चे का नामकरण संस्कार होता है। जिसमें गाँव घर के मेहमानों को बुलाया जाता है। इस अवसर पर पाहन सफेद मुर्गे की पूजा करते हैं, फिर पूर्वजों का नाम लेकर बच्चे का नामकरण किया जाता है। वहीं बिरसाईत समाज में बच्चे के जन्म से पहले व बाद में कोई संस्कार नहीं होता है, और जन्म बाद भी मां और बच्चे से मिलने में निषेध नहीं है। नामकरण संस्कार में बिरसाईत समाज के धर्म आबा, एअङ के साथ - साथ समाज के और भी सदस्य उपस्थित होते हैं, और सभी के सामने बच्चे के माता -पिता बच्चे का नाम चुनकर अपने पूर्वजों के नाम पर या जिस दिन जन्म हुआ है उसी दिन के आधार पर नाम रखते हैं। जैसे मंगलवार के दिन जन्म लिया है तो उसका नाम मंगल, मंगरा आदि।

मृत्यु संस्कार सरना तथा बिरसाईत दोनों समुदाय में दफनाने की क्रिया है, लेकिन दोनों का अलग – अलग प्रक्रिया से होती है। सरना समुदाय में मृत व्यक्ति को उत्तर – दक्षिण दिशा में दफनाने के बाद पत्थर गाड़ने की संस्कृति है, वहीं बिरसाईत समाज में पूर्व – पश्चिम दिशा में दफनाने के बाद पत्थर गाड़ने की संस्कृति है। सरना धर्म में मृत व्यक्ति का उम्बूल अदेर, जंग बहा (जंग हलङ), जंग उगुर, दिरी बिद, दिरी चापि जैसे धार्मिक, सामाजिक-सांस्कृतिक अनुष्ठान सम्पन्न होता है, यह पूजा अनुष्ठान पहान द्वारा सम्पन्न किया जाता है। वहीं बिरसाईत समाज में केवल मृत व्यक्ति के नाम पर दिरी बिद (पत्थरगड़ी) किया जाता है। बिरसाईत समाज के धर्म आबा, एअङ और बिरसाईत समाज के लोगों और गाँव घर के मेहमानों की उपस्थिति में सम्पन्न होती है।

निष्कर्ष:

क्षेत्र कार्य के आधार पर संकलित प्राथमिक आँकड़े से स्पष्ट होता है कि सरना एवं बिरसाईत धर्म मुंडा समुदाय की सांस्कृतिक पहचान, सामाजिक एकता और पारंपरिक जीवन-दर्शन के आधार हैं। दोनों धर्म प्रकृति के प्रति सम्मान, सामुदायिक सहयोग, पूर्वजों के प्रति श्रद्धा तथा नैतिक जीवन पर बल देते हैं, फिर भी उनकी धार्मिक मान्यताओं और कुछ अनुष्ठान समाज में संतुलन, सद्भाव और सामूहिक कल्याण स्थापित करती है। इस अध्ययन से स्पष्ट होता है कि ये दोनों धर्म मुंडा समुदाय की धार्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक पहचान के मुख्य आधार हैं। दोनों धर्म की उत्पत्ति प्रकृति, पूर्वजों और सामुदायिक जीवन से जुड़ी है। दोनों का उद्देश्य मनुष्य, जीव जगत, प्रकृति और समाज के बीच संतुलित संबंध बनाए रखना है।

सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टिकोण परिपेक्ष्य अध्ययन से स्पष्ट होता है कि दोनों समाज की परिवारिक संरचना पितृवंश से संबंधित होती है। जो मुंडा जनजाति की परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन बनती है। वर्तमान समय में बदलती परिस्थितियों के बावजूद परिवार आज भी सामाजिक एकता, सांस्कृतिक संरक्षण और सामुदायिक पहचान का सबसे महत्वपूर्ण आधार बना हुआ है। वर्तमान अध्ययन सरना और बिरसाईत दोनों में विवाह एक ही गोत्र में निषिद्ध माना जाता है उनकी धार्मिक अनुष्ठानों एवं आधुनिक परिवर्तन के बावजूद दोनों परम्पराएं मुंडा समाज की सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित रखने में अहम भूमिका निभा रहीं हैं। प्रस्तुत अध्ययन सरना की धार्मिक आस्था प्रकृति पूजा, पूर्वजों की सम्मान से है वहीं बिरसाईत समुदाय की धार्मिक आस्थाएं सामाजिक सुधार के साथ नैतिक मूल्यों और सामूहिक सामाजिक जागरूकता, प्रकृति संरक्षण पर आधारित है। दोनों ही धर्म समाज की सांस्कृतिक निरंतरता और सामाजिक एकता को सुदृढ़ करती है।

अत: इस अध्ययन का निष्कर्ष यह है कि सरना एवं बिरसाईत धर्म दोनों आदिवासी समाज की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासत है। जहां सरना धर्म प्रकृति – आधारित प्राचीन धार्मिक परंपरा का प्रतिनिधित्व करता है, वहीं बिरसाईत धर्म ने उसी सांस्कृतिक आधार पर सामाजिक सुधारकर धार्मिक पुर्न:जागरण और सामूहिक एकता को नई दिशा प्रदान की है। सरना और बिरसाईत दोनों ही परम्पराओं में आज भी आदिवासी समाज की पहचान, आस्था, सम्मान, पर्यावरण संरक्षण के लिए सजगता के साथ-साथ अपनी आदिवासियत सांस्कृतिक विरासत को जीवित रखे हुए हैं। दोनों समुदाय में कुछ भिन्नता होने के बाद भी इनमें आपसी सहयोग, सामुदायिक एवं पारंपरिक व्यवस्था जीवंत है। आधुनिक विकास प्रक्रियाओं के कारण इसमें अनेक परिवर्तन तथा सामुदायिक सहयोग आज भी इनकी सामाजिक- सांस्कृतिक पहचान का महत्वपूर्ण आधार है।

संदर्भ सूची (References List):

हॉफमैन, जॉन बैपटिस्ट (1950) “एनसाइक्लोपीडिया मुंडारिका” Superintendent, Government Printing Bihar, Patna

कुमार सुरेश सिंह, बिरसा मुंडा और उनका आंदोलन (1872-1901), (2003) वाणी प्रकाशन, 4695, 21-ए, दरियागंज, नयी दिल्ली

मुंडा, रामदयाल एवं मानकी, रत्नसिंह (2009) “आदि धर्म” राजकमल प्रकाशन न्यू दिल्ली

रॉय, एस. सी. (1912) “द मुंडाज एण्ड देयर कंट्री” सिटी बुक सोसाइटी, कलकत्ता

त्रिगुणायत, जगदीश, (1968) “मुंडा लोककथाएं” बिहार कल्याण विभाग, पटना (बिहार वेल्फेयर डेवलपमेंट)

ओड़ेअ, मेनस एण्ड P. Ponette, S.J. “सिङबोङा ओड़ो: एटअ: एटअ: बोङाको” कैथलिक प्रेस, रांची, इंडिया

मिंज, दिवाकर, “झारखंड का इतिहास” (2021) क्राऊन पब्लिकेशन, आर्यन टावर, जेल रोड, रांची, झारखंड